समाज विकासमाला

तीर्थंकर महावीर

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ६२

तीर्थंकर महावीर

संक्षिप्त जीवन-परिचय और उपदेश

लेखक
यशपाल जैन

सम्पादक
यशपाल जैन

१९५७
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

प्रथम बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

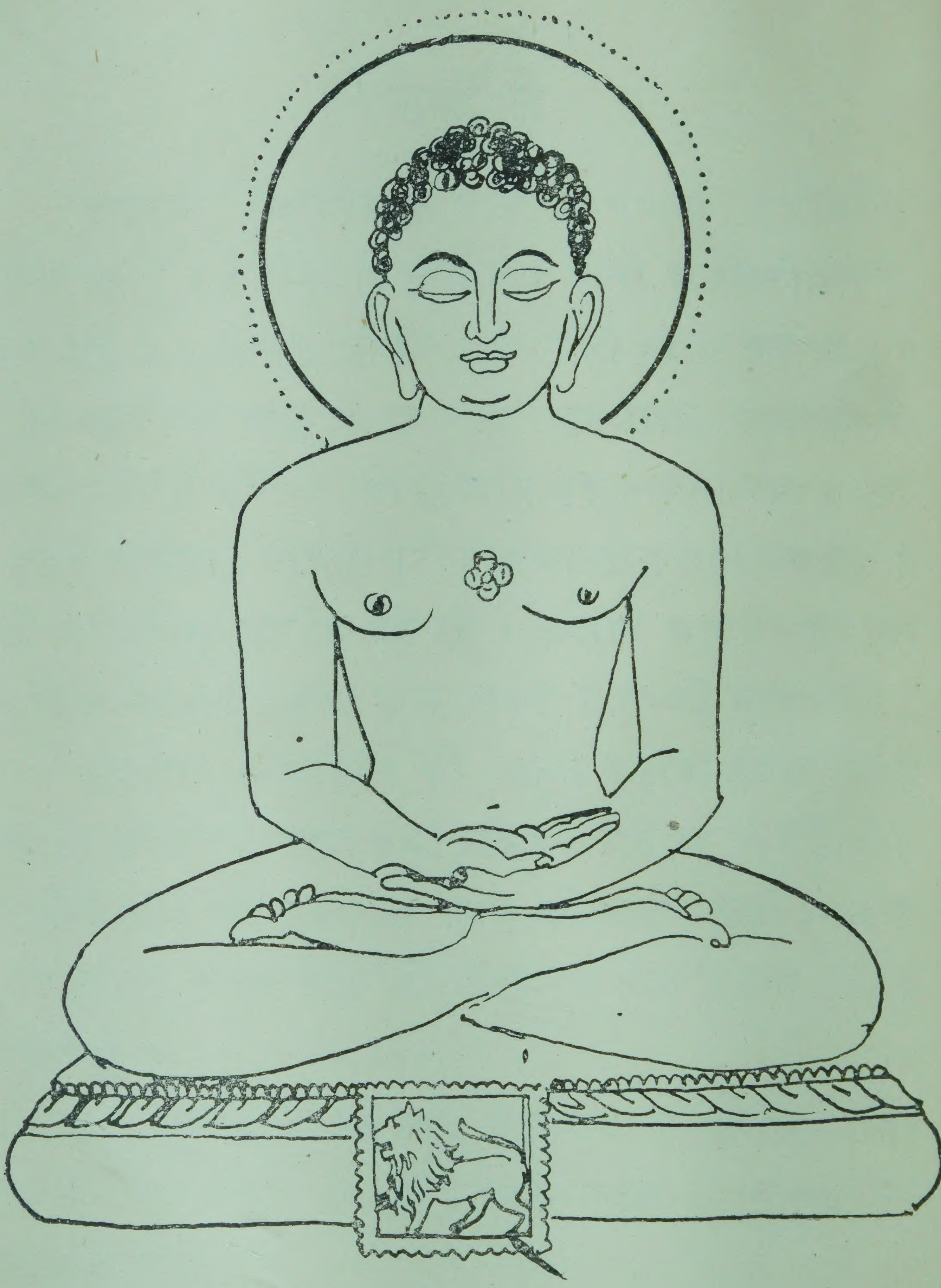
पाठकों से

भगवान महावीर के नाम से पाठक भलीभांति परिचित हैं। वे जैनों के चौबीसवें यानी आखिरी तीर्थंकर हुए हैं। उनका जीवन शुरू से ही त्याग का रहा। तीस साल की उम्र में राजपाट पर लात मारकर वे साधना करने चले गये। बारह साल तक उन्होंने बड़ा कठोर जीवन बिताया। साधना पूरी होने पर तीस साल तक लोगों की भलाई का उपदेश देते रहे। उन्होंने आदमी-आदमी के बीच भेद नहीं किया और सबके हित की बात कही।

महावीर ने अहिंसा को बहुत बढ़ावा दिया और जीवन को सरल, सादा तथा पवित्र बनाने पर जोर दिया। उन्होंने और भी बहुत-सी लाभ की बातें कहीं। आज ढाई हज़ार बरस बाद भी उनके उपदेश अपना महत्व रखते हैं।

इस पुस्तक में भगवान महावीर का परिचय तथा उनके उपदेश दिये गए हैं। इनके पढ़ने से पाठकों को लाभ होगा।

—सम्पादक



तीर्थंकर महावीर

तीर्थंकर महावीर

: १ :

आज से कोई ढाई हजार साल पहले की बात है। एक दिन एक पेड़ के पास कई बालक खेल रहे थे। खेलते-खेलते अचानक उन्होंने देखा कि पेड़ की जड़ में एक काला सांप फन उठाये खड़ा है और फुंकार रहा है। उस भयंकर नाग को देखकर बालक डर गये और लगे चीखने-चिल्लाने और इधर-उधर दौड़ने। लेकिन उनमें एक बालक ऐसा था कि न तो वह डरा, न चीखा-चिल्लाया, न अपनी जगह से भागा। उसने अपने साथियों से कहा, "इतना घबराते क्यों हो ?" पर उसकी बात सुनने के लिए कोई भी वहां नहीं ठहरा !

धीरे-धीरे वह बालक सांप की ओर गया और बड़ी होशियारी से उसने उसे पकड़ लिया, फिर मुस्कराता हुआ दूर जाकर उसे छोड़ आया।

इस बालक का नाम था वर्द्धमान। शकल-सूरत में वह ठीक वैसा ही था, जैसे कि और बालक थे, लेकिन हिम्मत उसमें गजब की थी। बड़ी-से-बड़ी मुसीबत से भी वह घबराता नहीं था।

आज जहां पटना नगर है, वहां से उत्तर में कोई तेरह-चौदह कोस पर कुण्डग्राम नाम की एक बस्ती थी। वहींपर चैत्र सुदी १३ को (ईस्वी सन् के ५९९ बरस पहले) इस बालक का जन्म हुआ था। उसके पिता का



वर्द्धमान न घबराये, न भागे

नाम सिद्धार्थ और मां का त्रिशला था। जबसे बालक मां के पेट में आया था तभी से घर में हर तरह की बढ़ोतरी हो रही थी। इसीलिए पैदा होने पर उन्होंने बालक का नाम वर्द्धमान रक्खा। ऐसे बालक को पाकर कौन

नहीं फूलेगा ? वर्द्धमान के मां-बाप की भी खुशी का ठिकाना न रहा। उनके राज्य में तरह-तरह से आनंद मनाया गया, कैदी छोड़ दिये गए और गरीबों को पैसा बांटा गया।

बालक का लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार और दुलार से हुआ। पिता राजा थे, सो घर में किसी भी चीज़ की कमी न थी। सब तरह के आराम थे। मां-बाप चाहते थे कि लड़का पढ़-लिखकर होशियार बने और बड़ा होकर राजपाट संभाले। बालक सचमुच बड़ा तेज था। वह बराबर आगे बढ़ता गया। उसकी इस उन्नति को देखकर मां-बाप तो आनंदित होते ही थे, प्रजा के लोग भी बड़े खुश होते थे।

समय जाते देर नहीं लगती। वर्द्धमान भी बड़े हुए। अपनी बहादुरी के कारण वह महावीर कहलाने लगे। मां-बाप ने सोचा कि अब उसका विवाह कर देना चाहिए। उन्होंने यह बात लड़के से कही तो उसने मना कर दिया। मां से कहा, "मां, क्या देख नहीं रही हो कि दुनिया कितनी दुखी है, और धर्म की कितनी छीछालेदर हो रही है। लोग मोह-माया में फंसे हैं। लोक की भलाई के लिए इस समय सबसे ज्यादा जरूरत धर्म फैलाने की है।"

मां ने बड़े प्यार से समझाते हुए कहा, "बेटा, मैं जानती हूं, तुम्हारा जन्म संसार के कल्याण के लिए हुआ है। पर अभी तुम्हारी उम्र है कि तुम घर-गिरस्ती में पड़ो।"



विवाह के लिए मां ने उसे समझाया

वर्द्धमान को यह सुनकर बड़ा दुःख हुआ। वह बोले, "मां, तुम यह सब क्या कहती हो? इस देह का

क्या भरोसा है ! तुम कुछ भी कहो, मुझसे ऐसा नहीं होगा।"

पुत्र की बात पर मां चुप होगईं। वह नहीं चाहती थीं कि उनके बेटे के दिल को चोट लगे। उन्होंनें मन-ही-मन सोचा—बात यह ठीक कहता है। दुनिया आज अंधी हो रही है। वह अंधेरे में भटक रही है। उसे सही रास्ते पर लाने के लिए उजीता चाहिए। इस काया का क्या भरोसा है !

कुछ लोगों का कहना है कि उनके लिए एक लड़की तलाश करली गई थी। महावीर ने ब्याह करने से इन्कार कर दिया तो वह बड़ी दुःखी हुई और घरबार छोड़कर तपस्या करने के लिए एक पहाड़ी पर चली गई।

कुछ यह भी कहते हैं कि यशोदा नाम की एक राजकुमारी से उनका विवाह हुआ और उनके प्रियदर्शना नाम की लड़की पैदा हुई।

जो हो, एक बात पक्की है। महावीर का मन भोग में नहीं था। घर में वह रहते थे, लेकिन ठीक वैसे ही जैसे जल में कमल।

: २ :

दुनिया से महावीर का मन हट जाने का कारण

था। बुराई वैसे हमेशा से रही है; लेकिन वह जमाना तो कुछ और ही था। समाज में बुरी-बुरी रूढ़ियां घर कर गई थीं। आदमी के आचरण को ऊंचा उठाने के लिए जो नियम पहले से चले आ रहे थे, वे छिन्न-भिन्न होगये थे। लोग अपना मतलब देखते थे और अपने लाभ के लिए बुरे-से-बुरा काम भी कर सकते थे। धर्म की जड़ें हिल गई थीं। उसकी जगह स्वार्थ ने ले ली थी। आदमी सत्ता का दास होगया था। लोगों के दिल से प्रेम जाता रहा था। भाईचारे की भावना उनमें नहीं रही थी। काम-काज के सुभीते के लिए जो चार जातियां बनाई गईं थीं, वे अपने असली रूप को खो बैठी थीं। उनमें ऊंच-नीच का भाव पैदा होगया था। वे एक-दूसरे के काम में मदद देने के बजाय रुकावट डालती थीं।

स्त्रियों के बारे में समझा जाता था कि वे तो आदमियों के घर की जायदाद हैं। उनको आगे बढ़ने का मौका नहीं मिलता था।

यज्ञ उस समय खूब होते थे। उनमें पशुओं को चढ़ाया जाता था। लोग कहा करते थे कि यज्ञ की वेदी को खून से जितना ज्यादा लाल किया जायगा, उतना ही ज्यादा पुण्य होगा। बड़ी बेरहमी से पशुओं को

मारा जाता था।

असल में बात यह थी कि लोग धर्म के ऊपरी रूप को अधिक महत्व देने लगे थे। धर्म की आत्मा जाती रही थी। कर्मकाण्ड में फंस जाने से लोग धर्म के असली मर्म को भूल गये थे। वे जादू-टोने, टोटके, भूत-प्रेत आदि के अंध-विश्वासों में बुरी तरह जकड़ गये थे।

इन और ऐसी ही बहुत-सी बातों को महावीर अपनी आंखों से देखते थे। उन्हें दुख होता था कि लोग जान-बूझकर गड्ढे में गिरते हैं। जिस तरह दुनिया के दुखों को देखकर भगवान् बुद्ध का मन संसार से हट गया था, उसी तरह महावीर भी बुराइयों को देखकर दुनिया से उदासीन होगये। वह नया रास्ता खोजने लगे। वह ऐसा सुख चाहते थे, जो जीवन को सदा हरा-भरा रक्खे और जिसके मिल जाने पर और कुछ पाने की चाह न रहे।

: ३ :

जब महावीर २८ साल के हुए तो उनके मां-बाप का बिछोह होगया। महावीर के एक बड़े भाई थे नन्दिवर्द्धन। वह बड़े दुखी हुए, लेकिन महावीर पर कोई खास असर न पड़ा। वह जानते थे कि दुनिया की सब चीजें नाशवान हैं। जो जन्मा है, वह एक-न-एक

दिन मरेगा भी। उन्होंने अपने बड़े भाई को समझाकर कहा, "जीना और मरना, ये तो संसार के नियम हैं। उनके लिए शोक क्या करना!"

अब सवाल उठा कि पिता की गद्दी पर कौन बैठे? महावीर बड़े ही योग्य थें, सब लोग उन्हें प्यार करते थे, उनके गुणों पर मुग्ध थे। इसलिए नन्दिवर्द्धन ने उनसे अनुरोध किया कि पिता के राज को वही संभालें, लेकिन महावीर राजी न हुए। उनका दिल तो कहीं और ही रमा था। आख़िर बड़े भाई को वह बोझ अपने कंधों पर उठाना पड़ा।

महावीर को अब घर में रहना भारी लगने लगा। उन्होंने एक दिन अपने भाई से कहा कि मैं घर-गिरस्ती के जीवन से ऊब गया हूं। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं दीक्षा ले लूं।

भाई बड़े दुखी हुए। बोले, "माता-पिता के वियोग के दुख को मैं अभीतक नहीं भूला हूं। ऐसे समय में तुम भी मुझे छोड़कर चले जाओगे तो मेरा कहां ठिकाना लगेगा!"

इतना कहते-कहते भाई का दिल उमड़ आया और वह आगे कुछ भी न कह सके। उनकी भावना का आदर करके महावीर दो बरस तक घर में और रहे;

पर ये दिन उनके बड़ी मुश्किल से बीते। तीस बरस की उम्र में उन्होंने घर-बार छोड़ दिया। ज्ञान-ध्यान के लिए वह जंगल में चले गये। भोग से उनका मन पहले से ही हटा हुआ था। अब न किसीसे उन्हें राग था, न किसीसे द्वेष। बालक की तरह वह निर्मल और निर्विकार हो गये। वन में उन्होंने ऐसी तपस्या की कि उसका हाल पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जो मिलता खा लेते; जहां ठौर मिल जाता, पड़ रहते। तन पर उनके कपड़ा नहीं था। बच्चे उनको नंगा देखकर उन पर धूल फेंकते, पत्थर मारते, कोई-कोई उन्हें बुरा-भला भी कहता, कोई-कोई उनपर हाथ भी उठा देता, लेकिन महावीर धीरज के साथ सबकुछ सह लेते। सच यह है कि उन्हें शरीर की भी सुधि नहीं रही थी। काया को आराम पहुंचानेवाली सब चीजों का उन्होंने त्याग कर दिया था।

बारह बरस तक वे इसी प्रकार तपस्या करते रहे। इस अरसे में उनपर क्या-क्या बीती, किन-किन मुसीबतों का उन्हें सामना करना पड़ा, इसकी कहानियां सुनकर दिल दहल उठता है। एक बार वह घूमते हुए एक गांव में पहुंचे। वहां एक यक्ष रहता था। वह किसी और का वहां रहना गवारा नहीं कर सकता था। लोगों ने महावीर को

समझाया कि वहां न जायं, लेकिन वह न माने। रात को यक्ष आया और एक आदमी को वहां देखकर उसका पारा चढ़ गया। पहले तो उसने उन्हें तरह-तरह से डराने की कोशिश की, लेकिन जब उनपर कोई असर न होते देखा तो वह भयंकर सांप बन गया, और लगा उन्हें बार-बार काटने। महावीर अडिग रहे। आखिर उसने समझ लिया कि यह कोई मामूली आदमी नहीं है। वह उनके पैरों पर गिर पड़ा और उनसे क्षमा मांगने लगा।

महावीर ने कहा, "हे यक्ष, जिस प्रकार तुम्हारे आत्मा है, उसी प्रकार दूसरों के भी है। इस बात को समझो और किसीको दुख न पहुंचाओ।"

यक्ष ने कहा, "प्रभो, मैंने अपने जीवन में बड़े पाप किये हैं।"

महावीर बोले, "उनके लिए पछतावा करो और आगे के लिए तय करो कि कोई पाप न करोगे। इसीसे तुम्हारा कल्याण होगा।"

एक बार वह एक दूसरे गांव के पास आये और एक ओर खड़े होकर अचल ध्यान में लीन होगये। उनसे कुछ ही फासले पर एक खेत था। कोई किसान उसे जोत रहा था। शाम को उस किसान को अपनी गाय-भैंसें दोहने जाना था। वह अपने बैलों को लेकर महावीर के

पास आया। उसने उनसे कहा, "जरा मेरे इन बैलों को देखते रहना। कहीं इधर-उधर न चले जायं।"

इतना कहकर वह चला गया। महावीर को पता भी नहीं था कि क्या हुआ। किसान के जाते ही बैलों को छुट्टी मिल गई। वे चरते-चरते जंगल में चले गये। लौटने पर किसान को बैल दिखाई न दिये तो उसने महावीर से पूछा, पर कोई उत्तर न मिला। वह बड़ा झल्लाया। रातभर बैलों की खोज में घूमता फिरा, पर कहीं भी उनका पता न चला। सबेरे थककर वह खेत पर लौट आया। वहां आकर देखता क्या है कि दोनों बैल महावीर के पास बैठे हुए हैं। अब क्या था। किसान आग-बबूला होगया और उसने महावीर में खूब मार लगाई। महावीर पर ध्यान में ही लगे रहे। जब इंद्र ने यह अन्याय देखा तो वह आये और किसान को बताया कि जिन्हें वह सता रहा है, वह कौन हैं। फिर इंद्र बोले, "अरे मूर्ख, जब ये अपना राजपाट छोड़ आये हैं तो तेरे बैलों को लेकर क्या करेंगे।" किसान बड़ा लज्जित हुआ।

इसी प्रकार एक ग्वाले ने महावीर को बहुत सताया। इंद्र आये। उन्होंने महावीर की रक्षा करनी चाही, लेकिन महावीर ने इन्कार कर दिया। बोले,

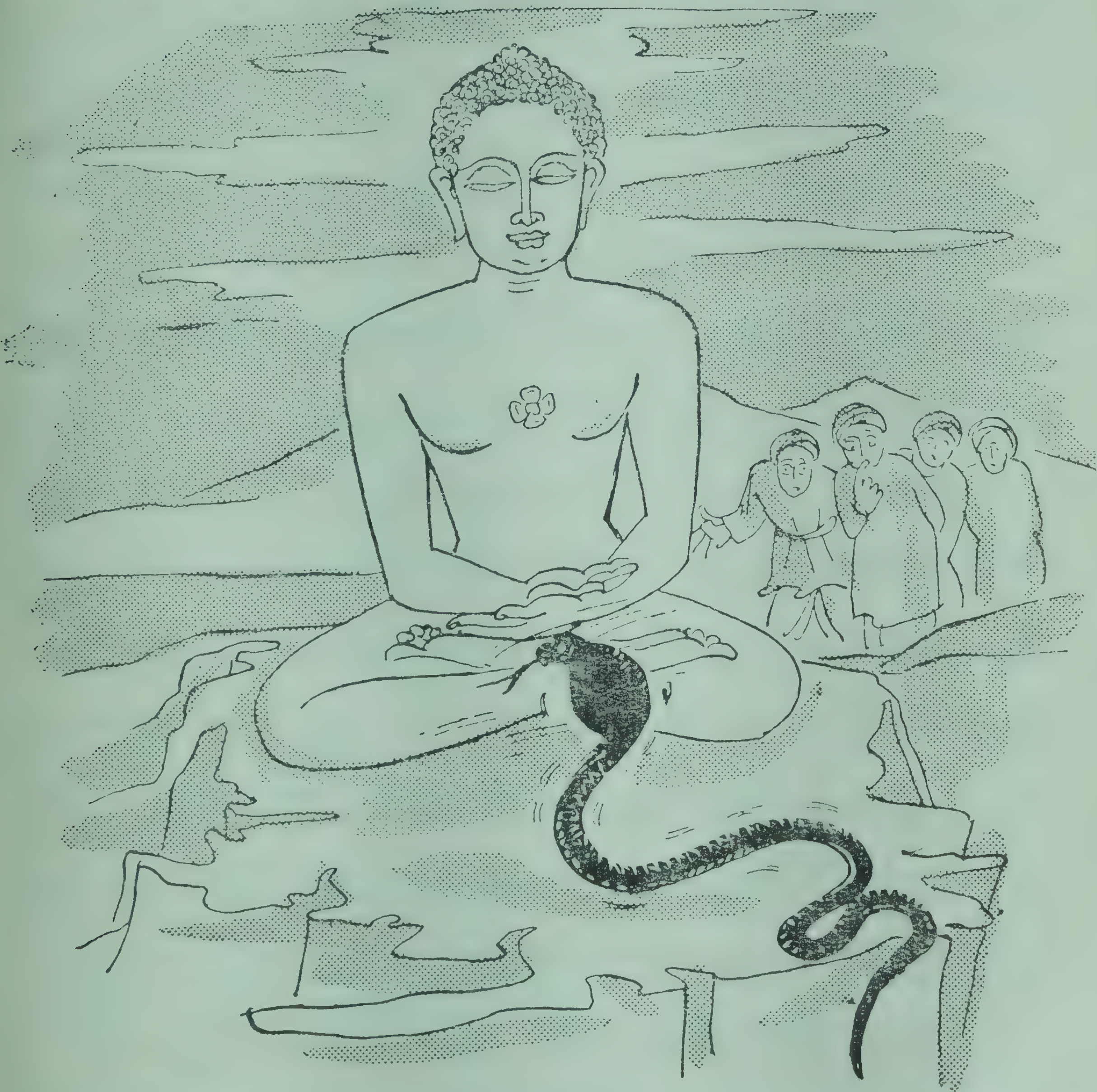
"आप चिंता न करें। तीर्थंकर किसीकी मदद नहीं लेते। वे अपना बचाव आप कर लेते हैं।"



किसान ने महावीर की बुरी तरह खबर ली

विहार करते-करते महावीर एक जगह पहुंचे। वहां से कुछ दूर पर एक बड़ा ही भयंकर सांप रहता था। जो भी उधर से निकलता, उसी को वह भस्म कर देता। लोग अपना-अपना घर छोड़कर डर के मारे कोसों दूर चले गये थे। महावीर को उस रास्ते जाते देख लोगों ने

उन्हें समझाया और रोका, पर महावीर डरनेवाले नहीं थे। वह सांप की बांबी के पास जाकर रुके।



महावीर ने सांप से कहा, "कल्याण के मार्ग पर चलो।"

अपने राज्य में दूसरे आदमी को देखकर सांप बहुत बिगड़ा; पर तबतक महावीर ध्यान में लीन हो गये थे। सर्पराज ने गुस्से में आकर बार-बार उनपर अपने फन से चोट की; लेकिन उनपर कोई असर न हुआ। तब

लाचार होकर उसने उनके चरणों पर सिर रख दिया और बार-बार क्षमा मांगने लगा। महावीर ने कहा, "हे सर्पराज, मोह न करो। अपनी भूलों को छोड़कर कल्याण के मार्ग पर चलो।"

: ४ :

ऐसी दो-चार नहीं, बीसियों बाधाएं आईं। उनकी साधना को डिगाने के लिए तरह-तरह के लालच दिखाये गए, कष्ट दिये गए, लेकिन महावीर अपने रास्ते से टस-से-मस न हुए। कुंदन बनने के लिए सोने को पहले तपना होता है। महावीर की भी बड़ी कड़ी कसौटी हुई। उनके बारे में जो कहानियां मिलती हैं, वे सही हों या न हों, पर इसमें कोई शक नहीं कि उन्होंने बड़ी कठोर साधना की। जिस प्रकार सूरज कभी नहीं रुकता, अपनी गति से चलता ही रहता है, उसी प्रकार महावीर की तपस्या भी रात-दिन चलती रही।

बारह बरस बाद उनकी तपस्या सफल हुई और ऋजुवालिका नदी के किनारे शाल वृक्ष के नीचे वैशाख सुदी १० के दिन उन्हें केवल-ज्ञान प्राप्त हुआ।

केवल-ज्ञान मिलने के बाद महावीर किसी एक जगह नहीं रहे। बराबर घूम-घूमकर उपदेश देते रहे। उनकी सभा में किसी भी जाति का आदमी आ सकता था।

उनके लिए सब बराबर थे। वे बड़े प्रेम से लोगों को सच्चे सुख और सच्ची शांति का रास्ता बताते थे।

महावीर से पहले तेईस तीर्थंकर और हो चुके थे। उन सबकी जैन-धर्म को अपनी-अपनी देन है, लेकिन अंतिम तीर्थंकर महावीर द्वारा जैनधर्म का सबसे अधिक विस्तार हुआ।

महावीर ने सबसे ज्यादा जोर अहिंसा पर दिया। उन्होंने उसे परम धर्म माना—'अहिंसा परमो धर्म'।: उन्होंने कहा, "सब कोई जीवित रहना चाहता है। सब को अपनी-अपनी जिंदगी प्यारी है। सब कोई सुखी बनना चाहता है। दुःख से दूर रहना चाहता है। इसलिए किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए। जो आदमी अपनी व्यथा को समझता है, वह दूसरों की व्यथा को भी अनुभव कर सकता है। इसलिए शांत, संयमी जीव दूसरों की हिंसा करके जीना नहीं चाहते।"

उन्होंने अहिंसा की शक्ति बताते हुए यह भी कहा, "अहिंसा से ही आदमी सुखी हो सकता है। अहिंसा से ही संसार में शांति बनी रह सकती है।"

उन्होंने सबकी भलाई के लिए एक मंत्र दिया। वह था—"जीओ और जीने दो।" इसका मतलब यह है कि अपनी तरह हम दूसरों का भी ध्यान रक्खें और

उन्हें वे सब सुभीते दें, जो हम अपने लिए चाहते हैं।

अहिंसा को समझाते हुए उन्होंने बताया कि अपनी बुराइयों को जीतना, अपनी इंद्रियों पर काबू रखना और किसी भी चीज़ से मोह न रखना सच्ची अहिंसा है।

अहिंसा के साथ-साथ उन्होंने संयम, तप और त्याग पर भी बड़ा ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि इनके बिना अहिंसा नहीं सध सकती।

बारह बरस की कठोर तपस्या करके उन्होंने दुनिया को सीख दी कि सबसे पहले अपने को कसो, अपने को शुद्ध बनाओ।

उन्होंने पांच महाव्रतों की महिमा बताई और लोगों से कहा कि जो अपनी और समाज की भलाई चाहते हैं, उन्हें इनका पालन अवश्य करना चाहिए। पहला व्रत है अहिंसा, यानी किसी भी जीव को न सताओ। दूसरा, सत्य--हमेशा सच बोलो, कभी झूठी बात मुँह से न निकालो। तीसरा, अस्तेय--चोरी न करो। चौथा, ब्रह्मचर्य--संयम रक्खो। पांचवां, अपरिग्रह--आवश्यकता से अधिक चीजें अपने पास न रक्खो और उन चीजों के मोह-जाल में न फंसो।

उन्होंने यह भी बताया कि दुनिया में दुख की जड़ आदमी का अहंकार है। यानी मैं जो कहता हूं, वही

सच है, इस बात से बड़े झगड़े होते हैं। उन्होंने दुनिया को एक बहुत बड़ा सिद्धांत दिया, जिसे अनेकांत या स्याद्वाद कहते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम जो कहते हैं, केवल वही सच नहीं है। जो दूसरे कहते हैं, उसमें भी सचाई है। एक ही चीज के कई पहलू होते हैं। इसलिए किसीको भी अपनी बात पर हठ नहीं करना चाहिए। आदमी की निगाह और दिल को बड़ा करने का यह सबसे अच्छा रास्ता है।

महावीर का उपदेश सुनने के लिए अमीर-गरीब, राजा-प्रजा, छोटे-बड़े, सब आते थे। उनके उपदेश तो अच्छे होते ही थे, साथ ही वह अपनी बात इतने सरल ढंग से कहते थे कि वह आसानी से सबकी समझ में आ जाती थी। उस समय की बोली अर्द्धमागधी थी। उसीमें वह अपनी बात कहते थे। उनका कहना था कि जाति या धर्म के कारण न कोई ऊंचा है, न नीचा। आदमी आदमी सब बराबर हैं।

: ५ :

केवल-ज्ञान होने के बाद तीस बरस तक महावीर घूम-घूमकर उपदेश देते रहे। वह दूर-दूर तक गये और सत्य और अहिंसा का संदेश लोगों को दिया। उनकी उम्र ७२ साल की हो चुकी थी।

विहार करते-करते वे पावा आये और बरसात के चार महीने बिताने के लिए वहीं ठहर गये। एक-एक करके तीन महीने बीत गये। चौथा भी आधा होगया। कार्तिक की अमावस्या के दिन उनका आखिरी उपदेश हुआ। रात के पिछले पहर में उन्हें निर्वाण-पद प्राप्त हुआ।

महापुरुष अपने लिए नहीं जीते, दूसरों के लिए जीते हैं। भगवान महावीर ने भी यही किया। वह राजा के पुत्र थे। उन्हें सब तरह का सांसारिक सुख मिल सकता था, धन आदि से वह दीन-दुखियों की सहायता भी कर सकते थे, लेकिन उन्होंने भरी जवानी में राज-पाट, धन-दौलत, सुख-साधन सबपर लात मार कर दूसरे ही रास्ते पर चलना शुरू कर दिया। क्यों ? क्योंकि वह जानते थे कि जो नाश होनेवाली चीजें हैं, उनके पीछे पड़ने में कोई सार नहीं है। उन्होंने वह राह पकड़ी, जिसपर चलकर आदमी बराबर ऊपर उठता जाता है और ऐसे स्थान पर पहुंच जाता है, जहां हर घड़ी आनंद से उसका दिल छलकता है।

ढाई हजार बरस बाद आज भी भगवान महावीर का नाम आदर से लिया जाता है और सबकी भलाई के लिए उन्होंने जो सिखावन दी, उससे लाखों-करोड़ों लोग प्रेरणा पाते हैं, आगे भी पाते रहेंगे।

महावीर के उपदेश

धर्म सबसे श्रेष्ठ है।

(कौन-सा धर्म ?) अहिंसा, संयम और तप।

जिस मनुष्य का मन इस धर्म में सदा लगा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

... ...

जिस तरह मूर्ख गाड़ीवान जान-बूझकर साफ-सुथरे अच्छे रास्ते को छोड़कर ऊंचे-नीचे, ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर जाता है और गाड़ी की धुरी टूट जाने पर शोक करता है, उसी तरह मूर्ख मनुष्य धर्म को छोड़कर अधर्म ग्रहण कर, अंत में मौत के मुंह में पड़कर, जीवन की धुरी टूट जाने पर शोक करता है।

... ...

जो रात और दिन एक बार बीत जाते हैं, वे फिर कभी वापस नहीं आते। जो मनुष्य अधर्म करता है, उसके वे रात-दिन बिल्कुल अकारथ जाते हैं।

... ...

जबतक बुढ़ापा नहीं सताता, जबतक व्याधियां नहीं बढ़तीं, जबतक इंद्रियां हीन नहीं होतीं, तबतक

धर्म का आचरण कर लेना चाहिए---बाद में कुछ नहीं होने का।

... ...

जो मनुष्य प्राणियों की स्वयं हिंसा करता है, दूसरों से करवाता है और हिंसा करने वालों का अनुमोदन करता है, वह संसार में अपने लिए बैर को बढ़ाता है।

... ...

जो डर और बैर से दूर है उस साधक को, जीवन के प्रति मोह-ममता रखनेवाले सब प्राणियों को सब जगह अपनी ही आत्मा के समान जानकर उनकी कभी भी हिंसा न करनी चाहिए।

... ...

ज्ञानी होने का सार ही यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

... ...

अपने मतलब के लिए अथवा दूसरों के लिए क्रोध या डर से किसी भी मौके पर दूसरों को दुःख पहुंचानेवाला असत्य वचन न तो स्वयं बोलना, न दूसरों को बुलवाना चाहिए।

... ...

काने को काना, रोगी को रोगी और चोर को चोर कहना हालांकि सच है, फिर भी ऐसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे उन व्यक्तियों को चोट पहुंचाती है।

... ...

जो मनुष्य भूल से भी झूठ किंतु ऊपर से सच मालूम होनेवाली भाषा बोलता है और वह भी पाप से अछूता नहीं रहता, तब भला जो जान-बूझकर असत्य बोलता है, उसके पाप का तो कहना ही क्या !

... ...

मतवाला आदमी धन के द्वारा न तो इस लोक में ही अपनी रक्षा कर सकता है और न परलोक में। फिर भी जैसे दीपक के बुझ जाने से रास्ता नहीं दीख पड़ता, वैसे ही धन के मोह से मूढ़ मनुष्य देखते हुए भी नहीं देख पाता।

... ...

संसारी मनुष्य अपने प्रिय कुटुम्बियों के लिए बुरे-से-बुरे पाप-कर्म भी कर डालता है, पर जब उसके बुरे फल भोगने का समय आता है तब अकेला ही दुःख भोगता है। कोई भी भाई-बंद उसका दुःख बटानेवाला, सहायता पहुँचानेवाला नहीं होता।

... ...

जैसे ओस की बूंद घास की नोंक पर थोड़ी देर तक ही रहती है, वैसे ही मनुष्य का जीवन भी बहुत छोटा है, शीघ्र ही नाश हो जानेवाला है। इसलिए थोड़ी देर को भी आलस न करो।

... ...

तेरा शरीर दिन-दिन जीर्ण होता जा रहा है, सिर के बाल पककर सफेद होने लगे हैं। अधिक क्या, शारीरिक और मानसिक सभी प्रकार का बल घटता जा रहा है। क्षणभर को भी आलस न करो।

... ...

तू विशाल संसार-समुद्र को तैर चुका है। अब भला किनारे आकर क्यों अटक रहा है? उस पार पहुंचने के लिए जितनी भी हो सके जल्दी कर।

... ...

जिसे मोह नहीं, उसे दुख नहीं। जिसे तृष्णा नहीं, उसे मोह नहीं। जिसे लोभ नहीं, उसे तृष्णा नहीं और जिसके पास लोभ करने योग्य कोई पदार्थ-संग्रह नहीं उसमें लोभ भी नहीं।

... ...

जो मनुष्य अपना भला चाहता है, उसे पाप को बढ़ानेवाले क्रोध, मान, माया और लोभ, इन चार

दोषों को सदा के लिए छोड़ देना चाहिए ।

... ...

क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का; माया मित्रता का नाश करती है और लोभ सभी अच्छे गुणों का ।

... ...

शांति से क्रोध को मारो, नम्रता से अधिकार को जीतो, सरलता से माया का नाश करो और संतोष से लोभ को काबू में लाओ ।

... ...

ज्यों-ज्यों लाभ होता जाता है, त्यों-त्यों लोभ भी बढ़ता जाता है । देखो न, पहले केवल दो माशे सोने की जरूरत थी, पर बाद में वह करोड़ों से भी पूरी न हो सकी ।

... ...

चांदी और सोने के कैलास के समान विशाल अनगिनत पर्वत भी यदि पास में हों तो भी लोभी मनुष्य की तृप्ति के लिए वह कुछ भी नहीं, कारण कि तृष्णा आकाश के समान अनंत है ।

... ...

काल बड़ी तेजी से चला जा रहा है । जीवन की

एक-एक करके सब रातें बीतती जा रही हैं। काम-भोग हमेशा रहनेवाले नहीं हैं। भोग-विलास के साधनों से रहित पुरुष को भोग वैसे ही छोड़ देते हैं, जैसे बिना फलवाले पेड़ को पक्षी।

... ...

स्त्री पुत्र, मित्र और बंधु-जन सब जीते-जी के ही साथी हैं। मरने पर कोई भी साथ नहीं जाता।

... ...

संसार में जितने भी प्राणी हैं सब अपने किये कर्मों के कारण ही दुखी होते हैं। अच्छा या बुरा, जैसा भी कर्म हो, उसका फल भोगे बिना छुटकारा नहीं हो सकता।

... ...

यह शरीर पानी के बुलबुले के समान क्षण-भंगुर है। पहले या बाद में एक दिन इसे छोड़ना ही है। इसलिए इसके प्रति मुझे तनिक भी आसक्ति नहीं है।

... ...

बैर रखनेवाला मनुष्य हमेशा बैर ही किया करता है। वह बैर में ही आनंद पाता है। हिंसक कर्म पाप उत्पन्न करनेवाले हैं, अंत में दुःख पहुंचानेवाले हैं।

... ...

जो मनुष्य सुन्दर और प्रिय भोगों को पाकर भी

पीठ फेर लेता है, सब प्रकार के भोगों को छोड़ देता है, वही सच्चा त्यागी कहलाता है ।

... ...

जैसे कछुआ आफत से बचने के लिए अपने अंगों को अपने शरीर में सिकोड़ लेता है उसी प्रकार पण्डित लोग विषयों की ओर जाती हुई अपनी इंद्रियां आध्यात्मिक ज्ञान से सिकोड़कर रक्खें ।

... ...

अपने-आप को ही दमन करना चाहिए । वास्तव में यही कठिन है । अपने-आपको दमन करने वाला इस लोक तथा परलोक में सुखी होता है ।

... ...

अपनी आत्मा को जीतना चाहिए । एक आत्मा को जीत लेने पर सबकुछ जीत लिया जाता है ।

... ...

शरीर को नाव कहा है, जीव को नाविक और संसार को समुद्र । इसी संसार-समुद्र को महर्षि लोग पार करते हैं ।

... ...

जो बालक, वृद्ध, स्त्री-पुरुष, साधु और गृहस्थ आदि किसीका भी अपमान तथा तिरस्कार नहीं करता, जो

क्रोध और अपमान का पूरी तरह से त्याग करता है, वही पूज्य है।

... ...

जो अग्नि में डालकर शुद्ध किये और कसौटी पर कसे हुए सोने के समान निर्मल है, जो रागद्वेष तथा भय से रहित है, उसे हम ब्राह्मण कहते हैं।

... ...

जिस प्रकार कमल जल में पैदा होकर भी जल से लिप्त नहीं होता, उसी प्रकार जो संसार में रहकर भी काम-भोगों से एकदम अलिप्त रहता है उसे हम ब्राह्मण कहते हैं।

... ...

जो नौका छेदोंवाली होती है, वह पार नहीं ले जा सकती। जो नौका छेदों से रहित होती है, वही पार पहुंचाती है।

... ...

सुनकर ही कल्याण का मार्ग जाना जाता है, सुन कर ही पाप का मार्ग जाना जाता है। दोनों ही मार्ग सुनकर जाने जाते हैं। बुद्धिमान साधक का कर्तव्य है कि पहले सुने और फिर अपने को जो अच्छा मालूम हो उसका आचरण करे।

समाज विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारू-अल रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

सस्ता साहित्य मण्डल

छः आना